डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-पाचवां | सितम्बर-2010 | मासिक पत्रिका

6
अमृत वेला

7
शादी
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
नवविवाहित जोड़ो को शुभकामनाएं व आर्शिवाद
(सन्तबानी आश्रम, अमेरिका)

13
वक्त
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान)

31
प्रेम-विरह
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
के मुखारविन्द से अनमोल वचन
(16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 - राजस्थान व 09871 50 19 99 - दिल्ली

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04 व 09667 23 33 04

उप सम्पादिका : नंदिनी

सहयोग : रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्रीगंगा नगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 102 | Website : www.ajaibbani.org

आज खुशी दिन आया जी, मनाया संगता नें

पूज्य बाबाजी,

आपके बच्चे आपके शुभ जन्मदिन पर आपको लाख-लाख बधाई देते हैं। हम आपके चरणों में विनती करते हैं कि आप हमारी भूले बख्शें और हम पर दया-मेहर करें।

आज खुशी दिन आया जी, मनाया संगता नें, (2)

1. *अवचल नगर, गोविंद गुरु का,* (2)
नाम जपत सुख पाया जी,
मनाया संगता ने.....

2. *मन इच्छे, से ही फल पाऐ,* (2)
करते आप वसाया जी,
मनाया संगता ने.....

3. *आप वसाया, सरव सुख पाया,* (2)
पुत भाई सिख बगासे जी,
मनाया संगता ने.....

4. *गुण गावै पूरण परमेश्वर,* (2)
कारज आया रासे जी,
मनाया संगता ने.....

5. *आप स्वामी, आपे राखा,* (2)
आप पिता आप माया जी
मनाया संगता ने.....

6. *कहो नानक, सतगुरु बलिहारी,* (2)
जिन ऐहो थान सुहाया जी,
मनाया संगता ने.....

✷✷✷

शुभ जन्मदिवस 11 सितम्बर 1926

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अमृत-वेला

परमपिता सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया दया की और भक्ति करने का मौका दिया है। जब परमात्मा हमारे ऊपर मेहर करता है तो हमें इंसान का जामा देता है। इंसान का जामा बहुत उत्तम है क्योंकि हम इस जामें में भक्ति करके परमात्मा से मिल सकते हैं।

जब परमात्मा इससे भी ज्यादा दया करता है तो वह हमारा मिलाप गुरु से करवा देता है। गुरु हमारे अंदर 'नाम' का दीपक जलाता है। यह गुरु की दया होती है। 'नाम' एक तोहफा होता है। जब हम गुरु के दिए हुए नाम की कमाई करते हैं तो अपने ऊपर रहम करते हैं।

सन्त इस दुनिया को अंधा कुँआ कहकर ब्यान करते हैं। इसमें गिरे हुए इंसान के लिए बाहर निकलने का साधन नहीं। जब परमात्मा दया करता है तो हमारा मिलाप किसी महात्मा से करवाता है। महात्मा हमारे अंदर 'नाम' का दीपक जलाकर 'शब्द' की डोरी लटका देते हैं हम उस डोरी को पकड़कर इस अंधे कुँए से प्रकाश के जरिए बाहर आ जाते हैं।

हमारे सतगुरुओं ने दया करके हमें भक्ति करने का मौका दिया है। वे हमें जिम्मेवारी सौंपकर गए हैं हमें प्रेम-प्यार से परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। प्यार से आँखें बंद करके अपना सिमरन करें।

✷✷✷

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा नवविवाहित जोड़ो को शुभकामनाएं व आर्शिवाद

शादी

सन्तबानी आश्रम, अमेरिका

मैं सबसे पहले परमपिता कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें एक जगह इकट्ठे होकर अपनी याद मनाने का मौका दिया है। उसके बाद मैं नवविवाहित जोड़ो को अपना आर्शिवाद व शुभकामनाएं देता हूँ। मैं डेविड टीड का धन्यवाद करता हूँ जिसने नवविवाहित जोड़ो से बिना कुछ लिए यह अच्छी सेवा की है।

भारत के लोग पंडित, भाई, पादरी या काजी की मौजूदगी में **शादी** करते हैं; ये लोग शादी की सारी विधियां करवाते हैं। गुरु नानकदेव जी इनके बारे में अपनी बाणी में लिखते हैं कि शादी विधि-विधान के बिना नहीं हो सकती लेकिन ये लोग शादी करवाने के लिए पैसे माँगते हैं जोकि ठीक नहीं है।

महाराज सावन और महाराज कृपाल दोनों ही कहा करते थे अगर संगत में से ही कोई **शादी** में किए गए वचनो को पढ़े तो अच्छा होगा। हमें खुशी है कि हमारे पास एक सतसंगी पादरी(डेविड टीड) है।

मैं आपको **शादी** की परंपरा के बारे में बताना चाहता हूँ कि पुराने जमाने मे क्या होता था और अब क्या होता है? आप सब ध्यान से सुनें और समझें। इसी के अनुसार अपना जीवन बिताएं तो सबके लिए अच्छा होगा। पुराने जमाने में औरत को पूरा हक था कि वह अपना साथी या पति चुने।

राजा जनक बहुत भजन करने वाले एक पूर्ण सन्त थे। उन्होंने अपनी बेटी सीता को किसी से भी **शादी** करने की आजादी दी थी। सीता ने सबके सामने भगवान राम को अपना साथी चुना और राम के गले में वरमाला पहनाई। सीता ने बहुत लोगों के सामने अपने साथी के

साथ वायदा किया और उसे निभाया। भगवान राम का दुश्मन रावण सीता का अपहरण करके ले गया लेकिन वह अपने पति के प्रति वफादार बनी रही। भगवान राम ने सीता को रावण के चंगुल से बचाने के लिए सब कुछ किया।

इसी तरह राजा द्रुपद ने अपनी बेटी द्रौपदी को आजादी दी कि वह जिसे पसंद करे उसके साथ **शादी** कर सकती है। द्रौपदी ने सबके सामने पांडव को अपने पति के रूप में चुना। पांडव और कौरव चचेरे भाई थे उन्होंने आपस में युद्ध किया। पांडवों ने अपने राज्य को दाँव पर लगा दिया और जुए में द्रौपदी को भी हार गए। कौरवों में सबसे बड़ा दुर्योधन राज्यसभा में द्रौपदी का अपमान करना चाहता था। दुर्योधन ने द्रौपदी की साड़ी उतरवानी शुरू की। द्रौपदी एक पतिव्रता स्त्री थी इसलिए भगवान कृष्ण प्रकट हुए और उन्होंने द्रौपदी को और साड़ियां दी जिससे वह अपमानित होने से बच गई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह अपने पति के प्रति वफादार थी।

इसी तरह राजा दमन ने अपनी बेटी दमयन्ती को अपना साथी चुनने की आजादी दी। दमयन्ती बहुत खूबसूरत थी उस समय स्वर्ग से कई देवता धरती पर दमयन्ती से **शादी** करने के लिए आए। दमयन्ती ने किसी देवता को न चुनकर राजा नल को चुना।

दमयन्ती ने राजा नल के साथ **शादी** की तो नकारात्मक ताकतें नाराज हो गईं। ये ताकतें परमात्मा की अवतार थी। इन नकारात्मक ताकतों ने राजा नल और दमयन्ती के सामने कठिन समय लाकर खड़ा कर दिया। राजा नल का सारा राज्य ले लिया। दमयन्ती पर इतना मुश्किल समय आया कि उसे खेत में जाकर गेहूँ के दाने इकट्ठे करने पड़े लेकिन उसने राजा नल के साथ शादी नहीं तोड़ी, **शादी** को निभाया।

यहाँ अमेरिका में बहुत से लोग मुझसे बात करते हैं कि वे दुखी हैं। वे **शादी** करते हैं और अगले दिन ही उस शादी को तोड़ देते हैं। इस तरह यहाँ के लोग अपनी जिंदगी बर्बाद कर रहे हैं।

तुलसी दास जी कहते हैं, ''अगर पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति वफादार हैं तो वे भजन किए बिना ही स्वर्ग में पहुँच सकते हैं।''

इस देश के लोगों को अपना साथी चुनने की आजादी है। जब ये अपनी इच्छा से **शादी** कर रहे हैं तो उसे निभाना चाहिए, शादी तोड़ना अच्छी बात नहीं क्योंकि जब हम परमात्मा के सामने, लोगों के सामने वचन लेते हैं तो हमें इन वचनों को निभाना भी चाहिए। इसके बाद भी हमारा मन शान्त नहीं होता हम फिर किसी और साथी की खोज में चल पड़ते हैं जोकि अच्छी बात नहीं है। जब हमने अपनी इच्छानुसार अपना साथी चुना है। हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हम अपने अंदर कोई ऐसी बुराई न आने दें जो हमारे बिछोड़े का कारण बने। हमें हमेशा **शादी** को निभाने की कोशिश करनी चाहिए।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अच्छी शादी एक आर्शिवाद है। हमें जिंदगी भर **शादी** को निभाना चाहिए, सिर्फ मरकर ही अलग हों। सुख-दुख में पति-पत्नी को सदा एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। शादी का मतलब एक-दूसरे की मदद करना और खुशी से दुनियावी जीवन की यात्रा करना है।''

पुराने जमाने में पति के मर जाने पर वफादार पत्नी उसके साथ ही जलकर मर जाया करती थी। एक बार राजा भर्तरी अपनी पत्नी के साथ एक महान *सती* के बारे में बात कर रहा था कि उस सति ने अपने पति की अंतिम क्रिया पर अपने को जला लिया। भर्तरी की पत्नी ने कहा, ''वह सति नहीं थी क्योंकि उसने खुद को जलाने के लिए चिता का इंतजार किया और खुद को पति के मरे हुए शरीर के साथ जला लिया अगर वह महान होती तो उसी समय अपना शरीर छोड़ देती जिस समय उसने सुना कि उसका पति मर गया है।''

जब राजा भर्तरी ने अपनी पत्नी के मुँह से ये शब्द सुने तो उसने सोचा! यह औरत बहुत ऊँचे शब्द बोल रही है। देखते हैं इसके अंदर कितनी सच्चाई है या यह ऐसे ही कह रही है? कुछ दिन बाद राजा भर्तरी शिकार के लिए गया तो उसने अपने कपड़ो पर खून लगाकर वह कपड़े नौकर के हाथ भेज दिए और नौकर से कहा कि रानी से जाकर कहो कि किसी जानवर ने राजा को मार दिया है। राजा अपनी पत्नी की प्रतिक्रिया देखना चाहता था। जैसे ही उसकी पत्नी ने यह खबर सुनी तो वह बेहोश हो गई और उसने अपने प्राण त्याग दिए।

जब राजा भर्तरी महल में वापिस आया, उसने देखा कि उसकी पत्नी शरीर छोड़ चुकी है तो वह बहुत पछताया क्योंकि यह सब तो उसने अपनी पत्नी को आजमाने के लिए किया था।

कुछ समय बाद राजा के मन में औरत के लिए तीव्र इच्छा हुई। मैंने आपको अभी बताया है कि मन कभी संतुष्ट नहीं होता। हम एक औरत से अलग होते हैं तो हमारे अंदर दूसरी औरत की इच्छा होती है। फिर हम दूसरी औरत की तलाश करते हैं। राजा भर्तरी ने फिर से शादी कर ली। यह पत्नी उतनी वफादार नहीं थी। वह नगर कोतवाल के साथ प्यार करती थी। वह कोतवाल एक वेश्या के पास जाता था।

एक बार राजा भर्तरी के राज्य में किसी लक्कड़हारे को एक खास किस्म का फल मिला जिसकी विशेषता यह थी कि जो इस फल को

खाएगा वह अमर हो जाएगा। लक्कड़हारे ने सोचा कि मैं एक गरीब आदमी हूँ, यह फल खाने से मैं अमर हो जाऊंगा मैंने तो सदा गरीब ही रहना है क्यों न मैं यह फल राजा भर्तरी को दे दूं! राजा भर्तरी एक धार्मिक राजा है, प्रजा के लिए अच्छा काम कर रहा है। राजा यह फल खाएगा तो प्रजा के लिए अच्छा काम करेगा। लक्कड़हारा अपने मन में यह बात लेकर राजा भर्तरी के पास गया और उसे अमर फल दे दिया।

राजा भर्तरी के दिल में ख्याल था कि उसकी नई पत्नी भी पहली पत्नी की तरह होगी! उसने सोचा! मैंने सदा दुनिया में रहकर क्या करना है? मुझे यह फल अपनी पत्नी को दे देना चाहिए इसे खाकर वह अमर हो जाएगी। राजा ने वह अमर फल अपनी पत्नी को दे दिया।

पत्नी ने सोचा मुझे यह अमर फल कोतवाल को दे देना चाहिए यह फल खाने के बाद वह जवान रहेगा क्योंकि वह कोतवाल से प्यार करती थी। उसने वह फल कोतवाल को दे दिया। जब यह फल कोतवाल के पास आया तो उसने सोचा कि मैं नगर का कोतवाल हूँ, मैं यह फल खाने के लिए सही इंसान नहीं हूँ; मुझे यह फल अपनी प्रेमिका (वेश्या) को दे देना चाहिए।

कोतवाल ने वह फल अपनी प्रेमिका वेश्या को दे दिया। जब यह फल वेश्या के पास आया तो वेश्या ने सोचा! मैं कई सालों से बुरा काम कर रहीं हूँ अगर मैं यह फल खा लूंगी तो मुझे सारी जिंदगी बुरा काम करना होगा जोकि मेरे लिए ठीक नहीं। राजा भर्तरी एक धार्मिक राजा है मुझे यह फल उसे दे देना चाहिए।

वह अमर फल कई जगह से होकर फिर राजा भर्तरी के पास पहुँच गया। वेश्या के पास वह फल देखकर राजा बहुत हैरान हुआ। राजा ने वेश्या से पूछा, ''तुम्हें यह फल कहाँ से मिला?'' पहले वह हिचकिचाई लेकिन जब राजा ने उसे डराया तो उसने बताया, ''मुझे यह फल कोतवाल ने दिया है।'' राजा ने कोतवाल को बुलवाया और उससे पूछा, ''तुम्हें यह फल कहाँ से मिला?''

कोतवाल ने सच को छुपाने की कोशिश की, कि मैं यहाँ जा रहा था, वहाँ जा रहा था मुझे वहाँ से यह फल मिला। राजा ने उसे धमकाकर कहा, ''अगर तुम मुझे सच नहीं बताओगे तो मैं तुम्हें सजा दूँगा।'' तब कोतवाल मान गया कि उसे यह फल रानी से मिला है फिर रानी को बुलवाया गया। पहले तो रानी नहीं मानी बाद में रानी ने कहा, ''मैंने यह फल कोतवाल को दिया था क्योंकि मैं उससे प्यार करती हूँ।''

रानी की ऐसी हालत देखकर राजा भर्तरी बहुत दुखी हुआ कि मैं तो इसे अपने प्रति बहुत वफादार समझता था। लानत है ऐसी औरत पर जो राजा से संतुष्ट नहीं और लानत है उस कोतवाल पर जो राज्य की महारानी से संतुष्ट नहीं वेश्या के पास जाता है। उदास होकर राजा भर्तरी अपना राज्य छोड़कर एक त्यागी साधु बन गया।

यह सब बताने का मतलब है जैसे राजा भर्तरी की उस पतिव्रता औरत ने अपना शरीर त्याग दिया क्योंकि उसने वचन दिया था कि वह बिछोड़ा सहन नहीं कर पाएगी। इसी तरह आज हम यहाँ शादी के मौके पर इकट्ठे हुए हैं तो हमें भी जिंदगी में अपनी शादी को निभाना चाहिए; सिर्फ मौत के समय ही अलग हों, हमेशा साथ रहें।

शादी तोड़कर हम अपने लिए और अपने बच्चों के लिए दिक्कतें पैदा कर लेते हैं। जब हम अपने बच्चों के आगे बुरा उदाहरण रखेंगे तो बच्चे क्या सीखेंगे? बच्चे माता-पिता की नकल करते हैं। बच्चे हमें ऐसा करते हुए देखेंगे तो सोचेंगे! अगर मेरे पिता ऐसा कर सकते हैं तो मैं क्यों नहीं कर सकता? **शादी** तोड़ने से हम आने वाली पीढ़ी की जिंदगी भी बर्बाद कर देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''जैसे माता-पिता वैसे बच्चे। बच्चे माता-पिता से बहुत प्रभावित होते हैं।''

महाराज कृपाल सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''जो अपने बच्चों को अच्छा बनाना चाहते हैं उन्हें पहले खुद अच्छा बनना होगा।''

✷✷✷

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

वक्त

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

हर रोज की तरह आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है। सभी सन्त-महात्माओं का एक ही उपदेश होता है, वे सब आपस में सहेलियां होती हैं; सब सन्त एक ही मंडल से आते हैं। ये हमेशा ही मालिक के दरबार में रहते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सन्त सन्त को दो कर जानी, सो जन जाण नरक की खानी।

जो भक्ति करता है वह मालिक रूप हो जाता है। हम पतासे को पानी में डालें तो पतासा पानी रूप हो जाता है अगर हम दूध में मिश्री डालें तो उसका स्वाद ही बदलता है रंग नहीं बदलता। कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, बाबा जयमल सिंह जी, महाराज सावन सिंह जी को अलग रूप समझना हमारी भूल है। ये सब एक ही देश से आते हैं, इनका एक ही संदेश होता है। वे जीव भाग्यशाली थे जिन्हें इन सन्तों के चरणों में बैठने का मौका मिला।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे बेशक लुकमान अच्छे हकीम थे मुर्दे को भी जिन्दा कर सकते थे अगर आज हमारा लड़का बीमार हो जाए और हम हठ करके बैठ जाएं कि हमने तो लुकमान हकीम से ही इलाज करवाना है चाहे हम उन पर कितनी भी श्रद्धा रख लें लेकिन हमारा बच्चा राजी नहीं हो सकता क्योंकि अब उनका **वक्त** नहीं। वह जिस समय में आए तब जो लोग उनके संपर्क में आए उन्होंने उनसे तंदरूस्ती प्राप्त कर ली। हमें वक्त के हकीम के पास जाना पड़ेगा तभी हम तंदरूस्ती हासिल कर सकते हैं।

अगर किसी टीचर को स्कूल छोड़े हुए पचास साल हो गए हों और हम चाहें कि हमने अपने बच्चे को उसी से शिक्षा दिलवानी है लेकिन ऐसा नहीं हो सकता, **वक्त** के टीचर की जरूरत पड़ती है।

राजा विक्रमादित्य बहुत अच्छा धर्मात्मा हुआ है। उसने प्रजा को बहुत सुख दिया अगर आज कोई लड़की हठ करके बैठ जाए कि मैंने तो राजा विक्रमादित्य से शादी करवाकर ही औलाद पैदा करनी है! बेशक वह लड़की सारी उम्र बैठी रहे ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि विक्रमादित्य अब जीवित नहीं है। **वक्त** के पति की जरूरत होती है।

महात्मा कहते हैं कि समय-समय पर उच्चकोटि के महात्मा आए अगर आज हम उनकी लेखनियों को पढ़ना शुरू कर दें फिर भी कामयाब नहीं हो सकते। वक्त का महात्मा ही हमारी सुरत को 'शब्द' के साथ जोड़ सकता है अगर हम यह कहें कि पहले जो सन्त-सतगुरु हुए हैं उनके बाद सन्त सतगुरु हो ही नहीं सकते तो यह हमारी भूल है।

जो बच्चा सतयुग में पैदा हुआ था उसे भी परवरिश के लिए माता के दूध की जरूरत थी जितनी की द्वापर और त्रेता में पैदा हुए बच्चों को थी। आज हम कलयुग में बैठे हैं। आज के बच्चों को भी परवरिश के लिए माता के दूध की उतनी ही जरूरत हे।

प्यारेयो! ऐसा नहीं कि आज महात्मा की जरूरत नहीं। आज भी महात्मा की, नाम-शब्द प्राप्त करने की जरूरत है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

कहो नानक प्रभ ऐह जनाई, बिन गुरु मुक्त न पाईए भाई।

गुरु के बिना मुक्ति का सवाल ही पैदा नहीं होता। मुँह में रोटी डालते हैं पता नहीं कि गले से नीचे किस तरफ चली जाती है, पानी पीते हैं पता नहीं किस तरफ चला जाता है। महात्मा को डाक्टर की तरह शरीर की एक-एक नाड़ी का ज्ञान होता है कि कान और मुँह के सुराख नीचे जाकर एक हो जाते हैं।

महात्माओं ने पूरे शरीर का अध्ययन किया होता है। वे यह भी जानते हैं कि परमात्मा हमारे शरीर के कौन से हिस्से में बैठा है अगर परमात्मा की खोज करनी है तो किस हिस्से में जाकर करनी है?

सब महात्माओं ने सन्त-सतगुरु के गुण गाए हैं। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''वेद कतेब से मुझे वह चीज नहीं मिली जो मुझे गुरु के पास जाकर प्राप्त हुई।''

कबीर साहब हमें प्यार से समझाते हैं कि हम जिस संसार को इन आँखों से देख रहे हैं, ये सब मूरतें काठ की कोठी हैं हर शरीर काठ की कोठी है इसको दसों दिशाओं से आग लगी हुई है लेकिन हम नहीं जानते कि इस आग को किस तरह बुझाना है?

हमें पता है कि बाहर कहीं आग लगती है तो फायर ब्रिगेड वाले आग बुझाने का इंतजाम करते हैं। जब लोग उन्हें आग लगने की खबर करते हैं तो वे फौरन आ जाते हैं। क्या हमारे पास भी ऐसा कोई साधन है जिसे हम आवाज लगा सकें; जो हमारी आग बुझा सके? आँखों को रूप देखने की आग लगी हुई है, यह सुंदर रूपों पर भागती है। नाक को वासना लेने की आग लगी हुई है। कानों को राग-रंग सुनने की आग लगी हुई है; ये हमेशा राग रंग पर भागते हैं।

आजकल काल ने ऐसी रचना रची हुई है कि हम सारा दिन टेलिविजन देखने में लगे हुए हैं। क्या हमारा ख्याल प्रभु भक्ति की तरफ या किसी अच्छी तरफ जाएगा? रसना को अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट खानों की आग लगी हुई है। त्वचा को स्पर्श करने की आग लगी हुई है। कौन है जो हमारी इस आग को बुझा दे? वह गुरु है; परमात्मा है अगर हम उसे याद करेंगे तो वह जरूर आएगा।

जिस तरह फायर ब्रिगेड वालों के पास दूर तक पानी फैंकने के लिए लंबी पाईप होती है उसी तरह हमारे गुरुदेव के पास 'नाम' का फव्वारा है अगर हम गुरु को पुकारेंगे तो वह हमारी मदद जरूर करेगा। नाम की कमाई करके जो अपने अंदर 'शब्द' को प्रकट कर लेता है उसके अंदर ऐसी आग के झोंके अपने आप ही बुझ जाते हैं। हमारा ख्याल बाहर से हटकर अंदर आ जाता है। कबीर साहब की बानी बड़ी प्यार भरी है, गौर से सुनें:

कबीर कोठी काठ की दहदिसि लागी आगि।
पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हमारा शरीर एक काठ की कोठी है। इसमें दसों दिशाओं से आग लगी हुई है।'' सन्त सतगुरु प्रमियों को जो रास्ता बताते हैं वे उस रास्ते पर चलकर बच जाते हैं। महात्मा पढ़-पढ़ाई की निन्दा नहीं करते।

मैं आर्मी में वायरलैस ऑपरेटर था। मेरी ट्रांसफर रियासत नाभा में हो गई। उस रियासत के राजा ने यज्ञ करवाया। जिसमे राजा ने बहुत से पंडित बुलवाए। उस सम्मेलन का नाम वेदांत सम्मेलन रखा गया। वहाँ सिरकियों का एक नगर बसाया गया। भीड़भाड़ में लोग सफाई की तरफ कम ही ध्यान देते हैं। लोगों को बीड़ी पीने की आम आदत होती है। किसी ने बीड़ी पीकर फैंकी तो उससे वहाँ आग लग गई। जिन लोगों ने सोच-विचार नहीं किया वे फौरन आग देखकर भाग गए। पंडित बैठकर विचार ही करते रहे कि यह आग क्यों लगी, किसने लगाई, कोई बुझाने वाला आएगा या नहीं? लेकिन उनके दिमाग में यह बात नहीं आई जैसे और लोग भाग गए हैं हम भी भागकर बच जाएं? वे पंडित जलकर वहीं खत्म हो गए।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्रेमी तो शब्द-नाम की कमाई करके तर जाते हैं। पढ़े-लिखे बाल की खाल निकालने में ही लगे रहते हैं। वे सोचते रहते हैं कि इस ग्रंथ में यह लिखा है और उस ग्रंथ में यह लिखा है।'' ***जेता पढ़या तेता कढ़या।***

कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ।
बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ।।

कबीर साहब उस पंडित को उपदेश करते हुए कहते हैं, ''देख प्यारेया! तू दिल से यह संशय निकाल दे। यह जो तेरे वेद-शास्त्र हैं इन्हें पानी में फैंक दे। वेद-शास्त्रों में तो धर्म-कर्म के बारे में ही लिखा है जो

वेद-शास्त्रों की बात को नहीं समझता वह झूठा है।'' आप अपनी बानी में यह भी लिखते हैं:

वेद कतेब कहो मत झूठे झूठा जो न विचारे।

यह जरूर लिखा है जब माता-पिता मर जाएं तो उनके नाम पर बर्तन, बिस्तर दान दें और छाया के लिए छाता भी दे। हम सब ऐसा करते भी हैं। क्या यह धोखा नहीं? जीवित रहते हुए माता-पिता के तो पेट सड़ते हैं उन्हें कोई रोटी नहीं देता लेकिन मरे हुए माता-पिता की खातिर हम हलवा बनाकर दान करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

जीवित पितृ न माने कोउ मुए श्राद्ध कराही।
पितृ भी बपुरे को-को पावे कोआ कूकर खाही।

आप यह संशा छोड़ दें कि आगे जाकर मिलेगा। 'शब्द-नाम' की कमाई करें, अंदर जाकर सच्चाई को देखें। यह जो कुछ भी करना है जीते-जी करना है।

हत्थी खाईए हत्थी देईए हत्थी बनिए पल्ले।
ऐसा कोई न जन्मया जो मोया पीछे घल्ले।

जब परमपिता कृपाल जी ने चोला छोड़ा उस वक्त मैं गाँव किल्लयांवाली में जाकर रहा वहां मुझे कोई नहीं जानता था। दुनिया मुझे पार्टी में घसीटती थी। दुनिया को जायदादें ही प्यारी होती हैं क्योंकि आमतौर पर लोग जायदादों के साथ ही बंधे होते हैं लेकिन मैं इस हक में नहीं था। वहाँ एक बुजुर्ग गुजर गया। वहाँ के लोगों ने मुझसे कहा कि आप पाठ करेंगे? मैंने कहा हाँ! मैं पाठ जरूर करूंगा लेकिन प्रसाद आप लोग करना क्योंकि मेरी आँख खराब है। उस गाँव के लोग मुझे सी.आई.डी. का अफसर समझते थे कि यह हमारे गाँव की खबरे लेने के लिए आया है।

उन लोगों ने मुझे मीठा खिलाना शुरू किया। मैं मीठा खाने का आदी नहीं था। वे लोग कहने लगे कि हमारा बूढ़ा तो मीठा खाता था।

मैंने कहा, ''क्या तुम्हें विश्वास है कि मेरे मुँह में मीठा डालने से उसे मीठा मिल जाएगा? फिर कल आप लोग कहेंगे कि हमारा बूढ़ा यह भी खाता था।'' वे हँसकर कहने लगे, ''हमारा बूढ़ा अफीम भी खाता था और नसवार भी लेता था।'' मैंने कहा, ''शुक्र है कि मैं बच गया नहीं तो आपने ये चीजें भी मेरे आगे रख देनी थी।''

कबीर संत न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत।
मलिआगर भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत।।

कबीर साहब सन्तों की महिमा गाते हैं कि सन्तों के पास चाहे कितने भी बुरे आदमी क्यों न आएं वे उन्हें भी ठंडक पहुँचाते हैं, उन पर 'नाम' के छींटे मारते हैं। ऐसा नहीं कि वे बुरों के साथ बुरे हो जाते हैं।

मेरे गुरुदेव कृपाल के समय का वाक्या है कि उनके पास एक औरत 'नाम' लेने के लिए आई जिसके अंदर बहुत बुराईयाँ थी और एक आदमी भी आया जो अपने आपको काफी अच्छा समझता था। मेरे पिछले आश्रम में महाराज ने उस आदमी को नाम देने से इंकार कर दिया; उससे कहा कि सतसंग सुनो और उस औरत को 'नाम' दे दिया।

वहाँ काफी लोगों ने चर्चा की कि हमने तो सुना था कि यह महात्मा बहुत अच्छा है। इस महात्मा ने उस आदमी में क्या कसूर देखा और उस औरत में क्या अच्छाई देखी? खैर मेरे साथ बातचीत हुई तो मैंने कहा कि यह तो वक्त ही बताएगा कि यह आदमी क्या करेगा और वह औरत क्या करेगी? बहुत से आदमी उस औरत को जानते हैं। वह औरत अभी जिन्दा है। 'नाम' लेने के बाद वह एक शरीफ महात्मा की जिंदगी जीने लग गई है। मैंने उस औरत के घर में सतसंग भी दिया था। वह मर्द भी अभी जिंदा है, उसे 'नाम' नहीं मिला लेकिन उसने हर प्रकार के ऐब धारण किए हुए हैं।

सन्त दिलों की जानते हैं कि किसे 'नाम' देना है और किसके अंदर क्या रखा हुआ है? महात्मा पापी-पुन्नी का ख्याल नहीं करते।

उन्हें जीव के अनेकों जन्मों का ज्ञान होता है। उनके पास जो आता है वह उसे सही रास्ता बताते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''महात्मा अंजान बनकर अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं। वे अपनी बड़ाई नहीं करते, सेवक के मुँह से सुनकर ही खुश होते हैं। जैसे साँप चंदन के वृक्ष को लिपटे रहते हैं फिर भी चंदन का वृक्ष अपनी शीतलता नहीं छोड़ता। साँप के अंदर जहर होता है चंदन का वृक्ष साँप को भी शीतलता देता है।''

कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु।
जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब गुरु ने नाम का उपदेश दिया, नाम की कमाई की तो मेरे मन को शान्ति आ गई। जिस काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की अग्नि से सारी दुनिया सड़ रही है वह हमारे लिए अमृत समान है।''

कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ।
कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ।।

गुरु नानकदेव जी के पास आकर कुछ आदमियों ने सवाल किया कि दुनिया को पैदा हुए कितना समय हो गया? आपने कहाः

तिथि वार न जोगी जाने ऋतु माह न कोई।
जां कर्ता सृष्टि को साजे आपे जाने सोई।
भेद न पाई पंडित जे लिखया होय पुराण।

आप कहते हैं अगर पंडितो को ज्ञान होता तो वे पुराणों में दर्ज कर जाते, मौलवियों को पता होता तो वे कुरान में लिख जाते, योगियों को पता होता तो वे अपने ग्रन्थों में लिख जाते कि सृष्टि कब पैदा हुई? जिसने इस सृष्टि को पैदा किया है वही जानता है कि यह कब पैदा हुई और इसने कब लय होना है। यह सब कुछ उसके हाथ में है।

जो 'नाम' में समाकर परमात्मा रूप हो जाते हैं, ऐसे मस्ताने भोले-भाले बन जाते हैं। वे दुनिया में आकर ऐसी भविष्यवाणियां नहीं करते कि यह दुनिया कब बनी है, कब खत्म होगी? या कब भूचाल आना है किस वक्त क्या होना है? वे ऐसा नहीं कहते क्योंकि यह तो गुड़ियों का खेल होता है।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिला है। यह आपकी ही दया थी कि आपने मुझे अपनी नजदीकी का मौका दिया। मैं देखता रहा हूँ कि सतगुरु अपने शिष्य के लिए क्या कुछ करता है। वहाँ आकर लोग कहते थे कि आपने हमारा यह काम किया वह काम किया। कोई कहता कि हम ट्रेन से आ रहे थे हमारा पैर फिसल गया ट्रेन चल पड़ी लेकिन हमें कोई चोट नहीं लगी हम बच गए। इस तरह के अनेकों ही सबूत हैं कि किस तरह आपने पाकिस्तान में बच्चों की रक्षा की। माता-पिता के कंधों पर बैठे हुए बच्चे कहते थे, ''यह वही बूढ़ा है जो रात को काफिले की रखवाली करता था।'' ये सब मेरी आँखों देखी कहानियां हैं। आप यही कहते कि यह सब बाबा जयमल सिंह जी की दया है, बाबा जी ही मेहर कर रहे हैं।

मैंने जब अपने गुरुदेव महाराज कृपाल को अपनी हालत बताई कि पहले आप किस तरह एक साल तक मेरे अंदर स्वामी जी के रूप में आते थे उस समय आपके बाल कटे हुए थे फिर आप अपने असली रूप में आने लगे। आपने कहा, ''यह सब हुजूर सावन की दया है।'' आप सोचकर देखें! सब कुछ करके भी यह नहीं कहते कि हमने किया है।

एक बार मेरे पास आपकी एडवांस पार्टी आई। उन्होंने डयोढ़ी में खड़े होकर इस तरह शब्द बोले जैसे पंडित आरती बोलते हैं। जिसमें वे बता रहे थे कि आज महाराज जी आएंगे। उस वक्त मुझे बहुत जोर से बुखार चढ़ा हुआ था। मैं बाहर नहीं गया तो वे लोग अंदर आ गए और मेरी हालत देखकर काफी परेशान हुए। उन्होंने गंगानगर पहुँचकर परमपिता कृपाल को मेरे बुखार के बारे में तार दे दी।

जब मैं दूसरे दिन गंगानगर गया तो मुझे पता चला कि प्रेमियों ने आपको मेरे बुखार के बारे में तार दे दी है। महाराज जी ने अगले दिन गंगानगर आना था वे नहीं आए। मेरा बुखार बिना किसी दवाई के उतर गया और उन्हें चढ़ गया।

आप जब अगले दिन गंगानगर आए तो आपका मुँह पीला पड़ा हुआ था। पता नहीं आपने इस गरीब की कितनी तकलीफ सही। एक प्रेमी जो आपके काफी करीब था उसने कहा, ''मैंने ही आपको इनकी बीमारी की तार दी थी।'' महाराज जी ने कहा, ''हाँ मुझे पता है तू ओलिया है।'' महात्मा दूसरों को बताते वक्त भी टोक देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आप भजन करते हैं और परमात्मा आपके ऊपर मेहर करता है तो आप अपने में से धुँआ तक न निकलने दें।''

कबीर साहब कहते हैं कि परमात्मा की दया को उसके प्यारे बच्चे ही समझ सकते हैं लेकिन वे दीवाने हो जाते हैं मस्त हो जाते हैं। वे आकर सबको यही भेद देते हैं कि प्यारेयो! अगर आप ऐसे करेंगे तो आप परमात्मा से मिल सकते हैं उसकी दया प्राप्त कर सकते हैं।

कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गई सब भूलि।
ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हमारे अच्छे भाग्य थे कि हमारे अंदर परमात्मा का डर पैदा हुआ। मनुष्य जन्म को सुधारने का चाव पैदा हुआ। भाव और भय दोनों का बानी में जिक्र आता है, ये दोनों एक साथ चलते हैं। जिसके अंदर डर है उसके अंदर ही प्यार है, जिसके अंदर परमात्मा का प्यार है उसके अंदर डर भी है।''

अगर कोई मामूली रिश्तेदार भी हमारे घर आता है तो हम कोई बुराई वाला काम नहीं करते अगर हम परमात्मा के बारे में सोचेंगे तो क्या हम बुराई करेंगे? लेकिन हमें परमात्मा का डर नहीं।

हमारी भी यही हालत है जैसे ओले जमीन पर पड़ते हैं, जब उन्हें सूर्य की तपिश मिलती है तो वे पानी रूप होकर समुद्र में जाकर मिल जाते हैं। इसी तरह जब हमारी आत्मा को गुरु-रूप किरणों की तपिश मिली तो यह भी बुखारात बनकर 'शब्द-नाम' में जाकर समा जाती है।

कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह।
दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह।।

काल भगवान ने आग, हवा, पानी, मिट्टी और आकाश पाँच तत्त्वों की रचना रची है। जीव खेलता कूदता है आखिर मिट्टी में मिलकर मिट्टी में ही समा जाता है।

पाँच तत्त का पुतला मानस रखया नाओं।

कबीर सूरज चाँद कै उदै भई सभ देह।
गुर गांविंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह।।

कबीर साहब कहते हैं कि हमारा जन्म दिन को या रात को होता है। रात में पैदा होने वाले चन्द्रवंशी और दिन में पैदा होने वाले सूर्यवंशी कहलाते हैं। इन दोनों दीपकों के जलते हुए ही हमारी देह पैदा होती है अगर इस देह को पाकर हमें गुरु या 'नाम' नहीं मिला तो हम मिट्टी में से आते हैं और मिट्टी में ही चले जाते हैं। हमें परमात्मा ने जो इंसानी जामा दिया है हम उस जामें को बेकार ही खोकर चले जाते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जिनि ऐसा हरि नाम ना चेतया से काहे जग आए।
ऐह मानस जन्म दुर्लभ है नाम बिन बिरथा सब जाए।
हुण वत हरि नाम न बीजया अग्गे भुखा क्या खाए।
मनमुखा नू फेर जन्म है नानक हरि भाए।

जह अनभउ तह भै नहीं जह भउ तह हरि नाहि।
कहिओ कबीर बिचारी कै संत सुनहु मन माहि।।

कबीर साहब सन्त मंडली को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जब तक हमारा अनुभव नहीं खुलता तब तक यम का डर लगा रहेगा। जब तक हमारे दिल में यम का डर है तब तक परमात्मा कैसे प्रकट होगा? परमात्मा वहीं प्रकट होगा जहाँ अनुभव खुल जाएगा।

कमाई करना कोई और चीज है, प्यार करना कोई और चीज है लेकिन अनुभव खुलना कोई और चीज है। अनुभव उसे कहते हैं जैसे हम यहाँ बैठे साफ देख रहे हैं कि यह आदमी काला है या गोरा है। यह औरत है या मर्द है। प्यारेयो! इसी तरह अंदर जाकर हम साफ देख लेते हैं, अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। जहाँ अनुभव खुल जाता है वहाँ डर खत्म हो जाता है।

मैंने एक दिन सुन्दरदास की कहानी बताई थी। मैंने उससे यही कहा था, ''तू साईकिल चलाना सीख ले धर्मराज से क्या कहेगा?'' उसका अनुभव खुला हुआ था। उसने कहा, ''मेरा धर्मराज से क्या मतलब। मैंने तो सावन शाह के पास जाना है। मैं डंके की चोट पर कहता हूँ कि मुझे सावन शाह लेने आएगा।''

प्यारेयो! यह सच्चाई है कि उसका गुरुदेव उसे लेने आया। यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने यह सब देखा था। महात्मा कहते हैं, ''जिसका अनुभव खुल जाता है उसका डर खत्म हो जाता है।''

कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नींद बिहाइ।
हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ।।

किसी प्रेमी ने कबीर साहब के पास आकर सवाल किया कि इस संसार में कौन सुखी है? मूर्ख सुखी है या पढ़े-लिखे सुखी हैं? सन्त सुखी हैं या जो इस रास्ते पर नहीं आते वे सुखी हैं? कबीर साहब ने कहा, ''इस संसार में दो किस्म के इंसान सुखी हैं। एक वे जिन्हें कोई समझ नहीं जो पशु की तरह रात को सोते और सुबह उठ जाते हैं उन्हें परमात्मा के बारे में कुछ भी पता नहीं। उसके सारे काम पशुओं की

तरह होते हैं। लोग हँसकर कहते हैं कि यह देखने में तो इंसान लगता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

करतूत पशु की मानस जात लोक विचारा करे दिन रात।

परमात्मा बनाने तो पशु लगा था लेकिन उसने दाढ़ी मूछें लगा दी सींग और पूंछ नहीं लगाई लेकिन अक्ल पशुओं की तरह ही है कबीर साहब कहते हैंः

पशु घड़ेंदा नर घड़ा चूक गया सींग पूंछ।
अक्ल वही हैवान की बिना सींग बिन पूंछ।

वे इंसान सुखी हैं जिनको कुछ फिक्र ही नहीं कि आगे काल क्या करेगा? या वे लोग सुखी हैं जो सोच-विचार करके परमात्मा में जाकर मिल जाते हैं।

कमाई करनी कोई आसान नहीं है। यह एक तरह की बला गले में डालने जैसी है। सुबह उठकर मन के साथ संघर्ष करना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं। बुराई करते समय गुरु का डर लगता है। ऐसे वाक्यात भी हो जाते हैं कि कई बार बुराई करते हुए गुरु कान से आकर पकड़ भी लेता है कि यह क्या कर रहा है?

मेरे पास एक प्रेमी का पत्र आया जिसमें उसने लिखा कि आप सन्त लोग ठीक नहीं करते। पहले तो आप लोगों को मीठी बातें बताते हैं और प्यार से अच्छा भोजन भी खिला देते हैं। सब विश्वास देकर फिर आप 'नाम' दे देते हैं। नाम देकर आप कहते हैं कि कमाई करें, पाप-ऐब छोड़ेंः यही चीजें तो हमें तंग करती हैं।

मैंने उसे जवाब दिया, ''प्यारेया! जो कुछ तू कह रहा है ये सब तेरे मन की चालाकी है। तू भजन किया कर।''

मैं बताया करता हूँ कि मैं बहुत विश्वास वाला था, मुझे भरोसा था कि गुरु तारेगा। बचपन से ही मेरे दिल में यह ख्याल था कि भक्ति में पूर्ण होना मेरा पहला फर्ज है। मैं छः साल का था जब मेरे दिल में प्यार

उठा कि वे कैसे आदमी थे जो जीवित महापुरुष के चरणों में जाकर बैठे फिर उन्हें छोड़कर चले गए।

मैं दुनीचन्द का इतिहास सुनता था कि वह मौत के डर से गुरु गोविंद सिंह जी को छोड़कर चला गया और अपने साथ दो-चार आदमियों को भी ले गया। घर जाते ही उसे साँप ने काटा और वह मर गया। मौत से डरता हुआ वह गुरु को छोड़कर आनन्दपुर से भागा आखिर मौत का ही शिकार हुआ।

मेरे दिल में यह ख्याल था कि जब गुरु मिल जाए तो इधर-उधर भटकने की क्या जरूरत है। परमात्मा इच्छा जरूर पूरी करता है। मेरे गुरु ने मुझे जो कहा मैंने वह किया लेकिन मन अड़ियल ट्टटू होता है यह कभी अड़ भी जाता है। आप जिस गुफा में गए थे यह मन एक बार वहाँ शेर बनकर खड़ा हो गया था कि अंदर नहीं जाने दूँगा।

मैंने दयालु कृपाल के आगे विनती की मेरी लाज रख। आप समय-समय पर पहुँचते रहे। आपने आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''देख बेटा!

ये बाहर नहीं खोलनी अंदर खोलनी है। यह हर जीव का काम नहीं।'' जब मश्क पूरी हुई तो आपने अपना बहुत सा काम मेरे सिर पर रख दिया; मैं काफी रोया चिल्लाया लेकिन मेरी किसी ने नहीं सुनी।

मैं अमेरिका गया वहाँ एक छोटे से बच्चे ने मुझसे सवाल किया, ''आप गुरु बनकर कितने खुश हैं?'' मैंने कहा कि मैं अपने दिल का हाल तुझे नहीं बता सकता। मैं बोलकर भी अपना दुख किसी को नहीं बता सकता। दुनिया का बोझ उठाना खालाजी का बाड़ा नहीं। यह गुरु ही है जो काम ले रहा है।

अगर मुझे यह ज्ञान होता कि गुरु मुझसे यह काम लेगा तो मैं सच कहता हूँ कि मैं इतना कठिन अभ्यास नहीं करता। परमात्मा ने जिस आदमी को हर तरह की सुख-सुविधा दी हो वह इंसान इस तरफ आ जाए क्या यह आश्चर्य की बात नहीं?

कबीर साहब कहते हैं कि गेंद गुम्बद के ऊपर खड़ी नहीं होती; राजा होकर हरि की भक्ति करे यह बड़े आश्चर्य की बात है। प्यारेयो! वे सुखी हैं जो कुछ नहीं जानते। जो जानते हैं उनके गले में एक प्रकार की बला पड़ जाती है। आप कहते हैंः

राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोए।
जो सुख साधु संग है सो बैकुंठ न होए।

आप मालिक के प्यारों की हिस्ट्री पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी ने ईंट-पत्थरों का बिछौना किया। आप अच्छे घर में पैदा हुए थे क्या अच्छे बिस्तरों पर नहीं सो सकते थे? जब आपकी माता ने पूछा, ''बेटा! तू ऐसा क्यों करता है, क्या नाम जपना कठिन है?'' आपने रोकर कहाः

आखन ओखा सुनण ओखा।

नाम कहना, नाम को प्राप्त करना और नाम का प्रचार करना भी कठिन है। महात्मा कहते हैं कि यह तो दिन-रात का रोना ही पल्ले पड़ा होता है लेकिन इस रोने में संसार का सुधार होता है। परमात्मा महात्मा

को अपना प्यारा पुत्र समझकर संसार में भेजता है। जब गुरु गोविंद सिंह जी को इस संसार में भेजने लगे तब उन्होंने कहा, ''मेरा दिल इस संसार में आने के लिए नहीं करता था लेकिन मैं परमपिता परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सकता।''

परमात्मा ने गुरु गोविंद सिंह जी से कहा, ''मैं तुझे अपना बेटा समझकर संसार में भेज रहा हूँ मैं हर तरह से तेरी मदद करूँगा।'' इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्द-रूप' परमात्मा वाक्य ही परदे के पीछे मदद करता है। जिसे अमृत पीने को मिले वह हथेली पर रखकर मोहरें नहीं खाता। जिसे स्वर्ग की सैर करने को मिले वह कल्लरों में मिट्टी नहीं उड़ाता।

जब ज्योत में ज्योत मिल जाए या जिसका एक बार प्यारे से मिलाप हो जाए वह बिछोड़े को गले नहीं लगाता। ऐसी हस्तियां परमात्मा की तरफ से बनी बनाई आती हैं; वक्त आने पर प्रकट हो जाती हैं।

मैं बैंगलोर गया वहाँ कुछ आदमियों ने मुझसे सवाल किया क्या बाबा सोमनाथ पूरे गुरु थे? मैंने कहा, ''मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता, यह आपका मामला है। आप अंदर जाकर देखें वह पूरे थे या अधूरे थे? मैं बाबा सोमनाथ से मिला था, मेरा उनके साथ प्यार था। मैं तो यही कहूँगा कि पश्चिम की आत्माओं की संभाल के लिए 'शब्द-गुरु' ने मेरी डयूटी लगाई है।''

बाबा सोमनाथ से प्यार करने वाली जो भी आत्माएं शरण में आएंगी वे जरूर फायदा उठाएंगी। मैं कन्नड़ भाषा नहीं जानता। रामसिंह प्रेमियों को मेरे साथ मिलवा रहा था। उन प्रमियों के अंदर इतना प्यार था कि वे आते ही मेरे पैरों में लेट गए। मैं माथा टिकवाने का शौकीन नहीं, मुझे बहुत बुरा महसूस हुआ। मैंने उनसे कहा, ''मैं यहाँ आपकी आत्मा के लिए आया हूँ; मैं आपके प्यार की कद्र करता हूँ आप लोग इस तरह मेरे पैरों में मत लेटें?''

रामसिंह ने कहा कि ये लोग आपका धन्यवाद करने के लिए आए हैं। एक-एक आदमी ने इकबाल किया कि जब आप सतसंग करते हैं तो हमें बाबा सोमनाथ दिखाई देते हैं। हम बाबा सोमनाथ समझकर ही आपके पीछे लगे हुए हैं।

अगर बाबा सोमनाथ वहाँ बूटे न लगाते तो ये आत्माएं कहाँ जाती? एक महात्मा बूटे लगा जाता है तो दूसरा आकर पानी दे देता है। एक महात्मा 'नाम' दे देता है और दूसरा महात्मा उन्हें सतसंग सुनाकर उनसे अभ्यास करवा लेता है।

पश्चिम से एक आदमी मेरे पास आया। वह पहले उस जगह से होकर आया था जहाँ बहुत मजबूत पार्टियाँ हैं। उसने मुझसे कहा कि मैं वहाँ गया था उनमें मुझे महाराज कृपाल दिखाई दिए लेकिन आपमें महाराज कृपाल दिखाई नहीं देते। मैंने हँसकर कहा, ''यह तो अपने-अपने बर्तन का सवाल है। मुझे तो तुझमें, यहाँ जो आस-पास खड़े हैं और यहाँ के पेड़ो में भी महाराज कृपाल दिखाई देते हैं। जहाँ उसे ऐसी बातें सिखाई गई थी वह वहाँ वापिस नहीं गया हमेशा यहाँ पर ही आता है और कहता है कि मुझे सच्चाई का ज्ञान अभी हुआ है।''

पश्चिम से कुछ आदमी किसी महात्मा से 'नाम' लेने के लिए आए। उन्होंने महात्मा से कुछ सवाल पूछे कि क्या आप अपनी अथोरिटी अपनी ताकत पर नाम देते हैं? उस महात्मा ने इकबाल किया, ''हाँ! हम अपनी ताकत पर 'नाम' देते हैं।''

वैसे तो राजस्थान में कोई नहीं आता लेकिन सच्चाई की खोज के लिए हर एक को आना पड़ता है। वही आदमी मेरे पास भी आए और उन्होंने वही सवाल मुझसे भी किया कि आप अपनी अथोरिटी अपनी ताकत पर 'नाम' देते हैं? मैंने कहा प्यारेयो! मैं तो शरीर भी अपना नहीं समझता, मुझमे कौन सी ताकत है जो मैं जीवों को 'नाम' देकर पार कर दूँगा। मैं गुरु की ताकत पर जीवों को नाम देता हूँ। गुरु की ताकत ही मेरे शरीर को चला रही है। वह जैसे बुलवाता है मैं बोलता हूँ।

मैं किसी को अपने साथ नहीं जोड़ता, मैं शब्द सावन-कृपाल के साथ जोड़ता हूँ। उन आदमियों ने यह सब कुछ किताबों में छपवाया और पश्चिम में जाकर सब कुछ बयान किया। जब मैं बाहर गया तो लोग भमक्कड़ो की तरह मेरे पास इकट्ठे हो गए।

कबीर साहब कहते हैं कि इस रास्ते पर जो भी कामयाब हुए हैं उन्होंने रातें जागी होती हैं, मेहनत की होती है। इस मैदान से साफ निकल जाना, नाम की कमाई करना कोई मामूली बात नहीं। प्यारेयो! आशिकों की नींद सूली पर होती है वे अपनी मश्क पूरी करने के बाद भी नहीं सोते। हमने समझा-बूझा है कि जब वह प्रकट हो जाता है तो वह न खुद सोता है और न सोने ही देता है। परमात्मा की दया से उन्होंने यह बला अपने गले में डाली होती है।

कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर।
लागी चोट मरम की रहिओ कबीरा ठउर।।
कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उदास।
चोट सहारै सबद की तासु गुरु मैं दास।।

कबीर साहब कहते हैं अगर किसी को एक बार सेला लग जाए तो वह फिर भी साँस लेता है और खत्म हो जाता है लेकिन 'शब्द' की चोट सहनी बड़ी मुश्किल है अगर कोई यह कहे कि 'शब्द' की चोट सहकर दुनिया में वैसा ही सब कुछ कर लूँगा तो वह मेरा गुरु है और मैं उसका दास हूँ।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिन्हें प्रेम का तमाचा लग जाता है वे घर के कारोबार की तरफ से चले जाते हैं। वे गुरु के ही हो जाते हैं।'' गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में लिखते हैं:

गुरु गुरु गुर कर मन मोर गुरु बिना मैं नाहीं होर।

अपने आपको छोड़कर गुरु को गाना मामूली बात नहीं। जिन्हें प्रेम-विरह की चोट लग जाती है उनकी यह हालत हो जाती है।

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ।
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ।।

मुल्ला मुनारे पर चढ़कर बाँग दे रहा था। उसके बाँग देने का यही मतलब होता है कि नमाज का समय हो गया है। आजकल तो मुनारे पर चढ़ने की भी जरूरत नहीं क्योंकि स्पीकर के साधन हो गए हैं। आजकल पंडित शहरों और गांवों में गीता बिस्तर पर ही पहुँचा देते हैं। सिक्ख लोग कोई सुने या न सुने जपजी साहब सोते हुए के पास पहुँचा देते हैं। हम पढ़ने वाले और सुनने वाले भी खुश्क होते हैं। हमारी अपनी तो श्रद्धा नहीं होती हम दूसरे की श्रद्धा भी खत्म कर देते हैं।

पहले समय में मैं देखा करता था कि लोग सुबह उठकर पहले गीता या जपजी साहब पढ़ते थे काम बाद में करते थे लेकिन आज मशीनी युग में हम नाम भी मशीनों से जपना चाहते हैं।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं कि हे मुल्ला! तू इतनी जोर-जोर से बाँग क्यों दे रहा है? परमात्मा तो तेरे अंदर है वह बहरा नहीं। समझाना तो हमने अपने मन को है।

सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबै जाइ।
कबीर जा की दिल साबति नहीं ताकउ कहां खुदाइ।।

मुसलमानों में शेख, सैयद और मुगल कई फिरके हैं। इसी तरह हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र फिरके हैं, इनमें ब्राह्मण उत्तम माने जाते हैं। उसी तरह मुसलमानों में शेख उत्तम माने जाते हैं। जैसे ब्राह्मणों को चढ़ावा चढ़ाते हैं उसी तरह शेखों को भी आदर देते हैं, चढ़ावा चढ़ाते हैं।

जिसके दिल में दुनिया भरी पड़ी है उसे सब्र कहाँ? वह हज जाकर भी क्या करेगा? उसके दिल में खुदा कैसे प्रकट होगा? परमात्मा मनमुखों को जितना मर्जी दे दे वे फिर भी भूखे ही रहते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

गुरु रामदास जी फरमाते हैं, ''जिनके अंदर सच्चा प्यार है वे प्रीतम के विछोड़े में कैसे जी सकते हैं? हे प्रीतम! हम बहुत देर से बिछड़े हुए हैं तू आप ही हमारे मिलाप का सामान कर।'' जिनके अंदर प्रीतम का **प्रेम** घाव कर चुका है वह उसके बिना कैसे रह सकते हैं? वे जब उसे देखते हैं तो उनका रोम रोम खिल जाता है।

जिन्हा पिरी प्यार क्यों जीवन पिर बाहरे।
जां सो देखन आपणा नानक थीवन पी हरे।
जिन्हां अंदर सच्चा न्यों क्यों जीवन पिरी ब्होणयां।
गुरमुख मेले आप नानक चिरि विछोन्या।

गुरु नानक साहब प्रेमण की विरह के हाल का फोटो खींचते हुए फरमाते हैं, ''प्रेमण के अंदर प्रीतम का जबरदस्त बिछोड़ा है। उसका प्रीतम विदेश में है वह रांझे को संदेश देती फिरती है, प्रीतम की कसमें लेती फिरती है उसके नैन **विरह** भरी याद में भर-भर आते हैं।''

साजन देश विदेशणे संनेहणे देंदी।
सार संभाले तिन सज्जणां मुंद नैन भरेंदी।

सच्चे प्रेमी को **प्रेम** के सिवाय कोई दूसरी चीज नजर नहीं आती। उसका घर-बार, माल-दौलत, धर्म-ईमान सब प्रेम ही होता है; वह प्रेम का ही पुजारी होता है। उसे पूजा के स्थान जहाँ माया का व्यवहार होता है प्रेम से खाली नजर आते हैं। प्रेमी अपने प्रेम नगर में अलग ही रहना चाहता है। साईं बुल्लेशाह जी यह हालत देखकर कह उठेः

धर्मसाल विच धाड़वी रहंदे ठाकुर द्वारे ठग।
मसीता विच तसवी रहंदे आशिक रहण अलग।

प्रेम की मंजिल किसी और जगह है, प्रेम की जमीन का आसमान ही अलग है; प्रेम ही उनकी तीर्थयात्रा है। तीर्थ और हज अगर प्रेम से खाली हैं तो उनका कोई लाभ नहीं। मलूकदास जी कहते हैं:

मक्का मदीना द्वारका काशी और केदार।
बिना प्रेम सब झूठ है कहे मलूक विचार।

उन्हें किसी के साथ नफरत नहीं होती, उनकी नजर में सब कुछ प्रेम ही प्रेम है। वे **प्रेम** को तलाश करते हैं, प्रीतम की गली में आसन लगाकर बैठ जाते हैं वहाँ नमाज पढ़ते और सजदे करते हैं। उनका प्रीतम घट-घट में बसता है। मालिक प्रेम है। प्रेम मालिक का दूसरा नाम है; प्रेम की लहर हर जगह चल रही है। किसी कवि ने कहा है:

प्रेम हरि को रूप है त्यों हरि प्रेम सरूप।
एक होय दोए यू वसे ज्यों सूरज और धूप।

मौहब्बत के पूर्ण होने पर प्रेमी का अपना भाव मिट जाता है वह अपार मालिक के प्रेम में विचरता है। प्रेमी को **प्रेम** के मुकाबले दुनिया

में कोई चीज नजर नहीं आती। प्रेम की दौलत के आगे प्रेमी को दुनिया के सब खजाने तुच्छ नजर आते हैं। वह दीन-दुनिया और दोनों आलम प्रीतम पर कुर्बान करने के लिए तैयार है।

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''अगर मेरा गुरु मेरा मन बस में कर दे तो मैं लोक और परलोक उसके काले तिल पर वार दूं!'' प्रेमी का दीन-ईमान **प्रेम** है वह केवल प्रीतम को चाहता है। जिसने मौहब्बत के प्याले की थोड़ी सी लज्जत चखी उसका दिल दोनों जहानों से उठ जाता है, वह न बैकुंठ माँगता है न मुक्ति माँगता है। पलटू साहब फरमाते हैं:

सन्त न चाहे मुक्ति को नहीं पदारथ चार।
नहीं पदारथ चार मुक्ति सन्तन की चेरी।
रिद्ध सिद्ध पर थूके स्वर्ग की आस न हेरी।
तीर्थ करे न व्रत नहीं कछ मन में इच्छा।
पुन्न तेज प्रताप सन्त को लग्गे इन्छा।
न चाहे बैकंठ न आवागमन निवारा।
सात स्वर्ग आभर्ग तुच्छ सम ताहीं विचारा।
पलटू चाहे हरि भक्त ऐसा मता हमारा।
सन्त न चाहे मुक्ति को नहीं पदारथ चार।

प्रेम में मालिक गुप्त होकर रहता है और प्रेमी जिस्म और जान की कैदों को छोड़कर मालिक का रूप ही हो जाता है। जब प्रेमी के दिल में प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित हो जाती है तो वह ज्वाला प्रीतम को छोड़कर सब ख्यालों और ध्यान को जला देती है। प्रीतम के चेहरे का जमाल चुम्बकीय होता है जो प्रेमी को प्रीतम की गली में पहुँचा देता है। जब यह दिल में ज्यादा नशा दे जाए तो दिल और जान सब उस

पर बलिहार हो जाते हैं। मान बड़ाई इल्म और अक्ल प्रेम के चलते पानी की तेज धार में बह जाते हैं।

यह सच है कि जिसने मौहब्बत के प्याले के कुछ घूट पिए वह अक्ल और फिक्र से बेगाना हो जाता है। प्रेमी अपने प्रीतम पर सब कुछ कुर्बान कर देता है, उसका दीन-ईमान जान-प्राण प्रीतम ही बन जाता है। वह प्रीतम की लगन में लोक परलोक को भूल जाता है। वह खुल्लम खुल्ला पुकार पुकार कर कहता है, ''अब वह निरोल **प्रेम** का बंदा बन गया है और दोनों जहानों के झमेलों से आजाद हो गया है।'' प्रेमी प्रीतम के रंग में रंगा जाता है। उसकी जाति मालिक की जाति हो जाती है; वह बाहर के रंगों से आजाद हो जाता है।

जामी साहब फरमाते हैं, ''तू ईश्क का बंदा बन गया है, अब तू हस्ब और नस्ब को तर्क कर दे क्योंकि इस रास्ते पर फलाना फलाने का बेटा है इस बात की कोई कद्र नहीं। प्रेमी प्रीतम के **प्रेम** के नशे में चूर हुआ उसी की धुन में जीता फिरता है उसे दुनिया के कुफ्र और ईमान से कोई गर्ज नहीं रहती।''

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''प्रेमी के लिए मुर्शिद के चरण मालिक के चरण है। वह बहिश्त के बाग और हूर के महलों को गली की खाक के बराबर भी नहीं समझता।''

प्रेमी के अंदर **प्रेम** की जबरदस्त कशिश होती है। वह प्रीतम से मिलने के लिए तरसता है। चाहे प्रीतम का घर समुद्र में हो! रास्ते में साँपों की वाड़ लगी हो! शेर गर्जते हों और मौत के फरिश्ते रास्ते में पहरा देते हों फिर भी प्रेमी प्रीतम की तरफ जाने से नहीं रूकता। कोई ताकत उसे प्रीतम की तरफ जाने से नहीं रोक सकती क्योंकि प्रीतम के साथ ही उसकी दुनिया आबाद है।

सँपा वाड़ समुंद घर शेरा पए बकुन्न।
जे जम होवे पहरु प्रेमी न रूकन्न।

शेष अगले अंक में .....